डॉ. नीरू मित्तल 'नीर'
पंचकूला

टूटती दीवारें

पंडित दीनानाथ लुटे-पिटे से अपने खण्डहर बन गये घर के बाहर बैठे थे। कार्य के सिलसिले में वह तीन दिन के लिए शहर से बाहर गए थे और पीछे से यह भयानक त्रासदी... भूकंप से उनकी गली के सभी मकान पूरी तरह ध्वस्त हो गए थे।

सड़क के दूसरी तरफ बने छोटे-छोटे मकान पूरी तरह धराशायी तो नहीं हुए परंतु उनमें भी दरारें आ गई थीं। सरकार की तरफ से राहत कार्य जारी था परंतु उन्होंने राहत शिविर में जाने से इनकार कर दिया। वह बार-बार यही रट लगाई जा रहे थे- "मेरे रामलला को मलबे से निकाल दो..."

परिवार के नाम पर उनका यही एक छोटा-सा मंदिर था जिसमें रामलला विराजमान थे। जमीन में दबे हुए जीवित और मृत लोगों को निकालने से ही कार्यकर्ताओं को फुर्सत नहीं थी, उनके रामलला को कौन निकालता? थोड़ी देर खुद ही मलबा हटाते रहे और फिर थक-हार कर एक पत्थर पर बैठ गए।

सामने के मकान में रहने वाला घसीटा अपनी तरफ से उन्हें राहत देने की कोशिश करता परन्तु उनके गुस्से से सहमा हुआ भी था। पंडित जी तो उस जैसे नीची जाति वाले आदमी की छाया पड़ जाने पर भी स्नान करते थे।

रात घिर आई थी, सुबह से पंडित जी ने एक घूँट पानी तक नहीं पिया था। रात बहुत मिन्नतें करके घसीटा उन्हें अपने घर ले गया। बाहर दालान में ही तख्त पर उन्हें आराम से लिटा दिया। थोड़ी देर में पीतल का गिलास, कटोरी, थाली, पतीला और कच्चे दाल-चावल लेकर उपस्थित हुआ- "पंडित जी! मैं जानता हूँ कि आप मेरे घर का खाना नहीं खाएँगे। पर मेरा यकीन मानिए, ये बर्तन बिल्कुल कोरे रखे थे। घर का चूल्हा बर्तन सभी सात्विक तरीके से माँज-धो दिए हैं। नल में पानी आ रहा है। मेरा अनुरोध है कि आप खाना बना कर खा लीजिए वरना बीमार पड़ जाएँगे।"

पंडितजी ने अनमने भाव से उसकी तरफ देखा और आँखें बंद कर लीं। शायद मन ही मन अपने रामलला से वार्तालाप कर रहे थे। उनकी तरफ से कोई उत्तर न पाकर घसीटा फिर बोला- "पंडित जी! आप घर में न आना चाहें तो आँगन में ही खाना बना लें, लेकिन इस तरह से भूखे-प्यासे न रहें।"

पंडित जी की बंद आँखों के भीतर अद्भुत दृश्य उभर आया। साक्षात राम-लक्ष्मण बैठे शबरी के जूठे बेर खा रहे थे। कभी वह निषाद राज को गले लगा रहे थे। उनकी आँखें भर आईं, अचानक से वे उठे और घसीटा को अपने गले लगा लिया।

"घसीटा! मैं आज तक बहुत बड़ी गलती करता रहा। अपने व्यवहार से मैंने कई बार तुम्हारा दिल दुखाया है, और तुम इस मुसीबत में मेरी मदद कर रहे हो।" उनकी आवाज भर्रा गई। "आज घर में जो भी बना है हम दोनों साथ बैठकर खाएँगे।"उनकी आँखों से बहते आँसुओं से छुआछूत की दीवार टूटकर अपना अस्तित्व खो चुकी थी। इस त्रासदी के भीतर से नया उजला संसार जन्म ले रहा था।